नाम :- डॉ. सुजाता गुप्ता
विभाग - हिंदी
वर्ग — स्नातक द्वितीय वर्ष (प्रतिष्ठा)
पत्र - IV
शीर्षक:- भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यगत विशेषताएँ

दिनांक :- 28.05.2020

भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यगत विशेषताएँ

भवानी प्रसाद मिश्र, अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' के प्रथम कवि हैं। यह संकलन कवि की छोटी-छोटी रचनाओं को भी उल्लेखित है। मन की भावनाओं को सामान्य जनजीवन में प्रयुक्त ठेठ बोली को काव्य में अभिव्यक्ति देना, उनकी प्रमुखता रही है। भवानीप्रसाद मिश्र ने 'दूसरा सप्तक' में यह स्वीकार किया है कि इस संग्रह में उनकी प्रतिनिधि कविताएँ नहीं हैं, इसीलिए इन कविताओं के आधार पर समूची काव्य चेतना का आकलन करना कठिन है। उन्हीं के शब्दों में, "दूसरा सप्तक की मेरी कविताएँ मेरी ठीक प्रतिनिधि कविताएँ नहीं हैं। जगह की तंगी सोचकर मैंने छोटी-छोटी कविताएं ही इसमें दी हैं। आशा गीत, दहन पर्व, अश्रु और आश्वास, बंधा सावन और ऐसी अन्य लंबी कविताएँ अगर पाठकों के सामने पेश कर सकता, तो ज्यादा ठीक अंदाज उन से लगता। बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुख मैंने इनमें कहे हैं, जिन का एक शब्द भी किसी को समझाना नहीं पड़ता।" इस स्वीकारोक्ति के बाद भी ग्यारह प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक, वर्णनात्मक, एवं संवेदनशील कविताएँ शामिल हैं, जिनमें कुछ प्रमुख कविताएँ हैं :- सतपुड़ा के जंगल, गीतफरोश, कमल के फूल, सन्नाटा, बूँद टपकी एक नभ से आदि। साधारण जीवन और सहज शैली ही इनकी काव्यों की प्रमुख विशेषता रही है।

साधारण लोगों का जीवन उनके काव्य में स्पष्ट दिखलाई देता है। उनकी सहज अभिव्यक्ति, हिंदी कविता में अपने जैसी

Scanned with CamScanner

एक ही है। सहज अभिव्यक्ति, साधारण और सहज भाषा के साथ अत्यधिक प्रभावक हो जाती है। मानवता में विश्वास और ~~समष्टि~~ समष्टि के सामने समर्पण की प्रबल भावना है। वे अपने काव्य को कमल के सुन्दर फूलों की भांति मनुष्यता के आंचल में रख देना चाहते हैं :-

"फूल लाया हूँ कमल के, क्या करूँ इनका ?
पसारें आप आँचल, छोड़ दूँ हो जाय जी हल्का !"

अपने स्नेहशील हृदय को वह मानवता के प्रति समर्पित कर देना चाहते हैं। सरलता और सहजता का कवि, सामान्य जनता को अपने काव्यों की सुगमता से आकर्षित कर लेता है :-

" जिस तरह हम बोलते हैं
उस तरह तू लिख
और उसके बाद भी
हमसे बड़ा तू दिख।"

यही सहजता उन्हें असाधारण बना देती है। लोगों के सम्मुख खड़ा कर देती है। दूसरी ओर प्रकृति-प्रेम उनकी काव्यों की एक अनन्य विशेषता है। वह उन्हें आत्मसात् कर लेता है। अपने अंचल विशेष के प्राकृतिक रूप का इतना प्रभावशाली और जीवन्त वर्णन का एक श्रेष्ठ उदाहरण 'सतपुड़ा के जंगल' काव्य में मिलता है :-

"झाड़ ऊँचे और नीचे, चुप खड़े हैं आँख मींचे
घास चुप है, कास चुप है, मूक शाल पलाश चुप है
नींद में डूबे हुए से, ऊँघते अनमने जंगल
सतपुड़ा के घने जंगल !"

मिश्र की कविता की एक प्रमुख बात उनकी बेबाकी भी थी। सृजन की भावुकता और जीवन व्यवहार के बीच का द्वंद्व थी उनकी कविता।

Scanned with CamScanner

उनकी कविताएँ पाठकों से सीधा संवाद करती है। भौतिकतावादी सुखों की अपेक्षा वे जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को सार्थक मानते हैं:—

"जिंदगी में कोई बड़ा सुख नहीं है
इस बात का मुझे बड़ा दुख नहीं है
क्योंकि मैं छोटा आदमी हूँ
बड़े सुख आ जाएं घर में
तो कोई ऐसा कमरा नहीं है जिसमें
उन्हें टिका दूं।"

किसानों के प्रति, उनके दुख-दर्द को सांझा करती हुई एक कविता इस प्रकार से है:—

मैं असभ्य हूँ क्योंकि खुले नंगे
पावों चलता हूँ
मैं असभ्य हूँ क्योंकि धूल की
गोदी में पलता हूँ।

उनकी कविताओं ~~का व्यंग्य, उनकी~~ प्रथम काव्य संकलन, 'गीत फरोश' के माध्यम से आया। यह अत्यंत ही लोकप्रिय हुई। 'गीत फरोश' कविता के माध्यम से कवि ने कलाकार और समाज पर व्यंग्य किया है। कविताएं किस प्रकार बाजार के सुभावन जाल में फंसती जा रही हैं, 'गीत फरोश' कविता में उनके इसी स्वरूप की चर्चा मिलती है:—

"जी हाँ, हुजूर मैं गीत बेचता हूँ
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ
मैं सभी किसिम के गीत बेचता हूँ
जी माल देखिए, दाम बताऊंगा
बेकाम नहीं है काम बताऊंगा
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने,"

Scanned with CamScanner

अपनी भावनाओं के विविध आयाम से गुजरकर कविता यथार्थ की भावभूमि पर खड़ी मिलती है। भवानी प्रसाद जी प्रारंभ से यही अनुभव करते रहे हैं कि काव्य में अनुभूति, ~~बातचीत~~ बातचीत की स्वाभाविक लय के द्वारा ही पहचानी जा सकती है। बहुत ही हल्के-फुलके ढंग से गंभीर चोट करने वाली उनकी कविताएं मनुष्य के बुनियादी सरोकारों से ही प्रभावित रहती हैं। वे व्यंग्य कर, उस चोट को भी टटोलती हैं जिससे मनुष्य आहत होता है। गांधीवादी दर्शन का प्रभाव भी उनकी कविताओं में दिखलाई देता है।

मिश्र जी का काव्य नई शैली, उच्च भावनाएँ तथा अपने सहज प्रभाव के लिए अत्यंत ही लोकप्रिय हुआ। सन् 1972 ई० में कृति 'बुनी हुई रस्सी' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला।

Scanned with CamScanner